श्रीहरिः

प्रयाग पंचक्रोशी की परिक्रमा

और

प्रयाग-महात्म्य

[प्रयागस्थ १०८ तीर्थों का यथाक्रम वर्णन]

पंच योजन विस्तीर्णं प्रयागस्य तु मंडलम् ।
प्रविष्टस्यैवतद्भूमावश्वमेध पदे पदे ॥

लेखक

प्रभुदत्त ब्रह्मचारी

प्रकाशक

हजारीलाल, प्रेम विद्यालय, प्रतिष्ठानपुर

पो० झूसी (प्रयाग)

प्रथम संस्करण } सम्वत् १९९० { मूल्य प्रेम